राष्ट्रीय छात्रशक्ति

वर्ष 4 ■ अंक 03 ■ जनवरी 2021 ■ ₹ 10 ■ पृष्ठ 32

भारत भक्ति सेवा पथ पर हम बढ़ते ही जायेंगे

राष्ट्रीय अधिवेशन की झलकियाँ

राष्ट्रीय
छात्रशक्ति
शिक्षा–क्षेत्र की प्रतिनिधि–पत्रिका

वर्ष 4, अंक 03
जनवरी, 2021

संपादक
आशुतोष भटनागर
संपादक–मण्डल :
संजीव कुमार सिन्हा
अवनीश सिंह
अभिषेक रंजन
अजीत कुमार सिंह

संपादकीय पत्राचार :
राष्ट्रीय छात्रशक्ति
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298
www.chhatrashakti.in
rashtriyachhatrashakti@gmail.com
www.facebook.com/Rchhatrashakti
www.twitter.com/Rchhatrashakti

स्वामी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक **राजकुमार शर्मा** द्वारा 26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, आई.टी.ओ. के निकट, नयी दिल्ली - 110002 से प्रकाशित एवं ओशियन ट्रेडिंग कं., 132 एफ. आई. ई., पटपड़गंज इण्डस्ट्रियल एरिया, नयी दिल्ली-110092 से मुद्रीत।

इस अंक में

05 66वें राष्ट्रीय अधिवेशन में 1,02,072 कार्यकर्ता हुए सम्मिलित

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 66वें राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन विदर्भ प्रांत के नागपुर स्थित स्मृति मंदिर परिसर, रेशीमबाग में किया गया था। अधिवेशन का उद्घाटन...

संपादकीय	04
मातृभूमि आराध्य हमारी, राष्ट्रभक्ति है प्रेरणा: निधि त्रिपाठी	06
स्वार्थी और आत्मकेन्द्रित रहना हमारे देश का स्वभाव नहीं: भय्या जी जोशी	07
वैश्विक संकट में उम्मीद की किरण बनी भारत की आध्यात्मिक विरासत: छगनभाई पटेल	11
BUILD INDIGENOUS NETWORK OF ONLINE RESEARCH CONTENT: ABVP	12
कोरोना काल में जान की परवाह किये बगैर लोगों की सेवा में लगे रहे अभाविप कार्यकर्ता: निधि त्रिपाठी	13
प्रस्ताव क्र.1/राष्ट्रीयता का भाव परिलक्षित करती राष्ट्रीय शिक्षा नीति का हो शीघ्र क्रियान्वयन	14
RESOLUTION : 2/ NATIONAL SCENARIO	20
आगामी परिस्थिति एवं अपने कार्य का स्वरूप : आशीष चौहान	21
RESOLUTION: 3/ AATMANIRBHARTA ASTEP TOWARDS PROSPEROUS INDIA	24
संघ और विद्यार्थी परिषद में दिये गये संस्कारों के कारण मिली है सफलता : नितिन गडकरी	25
पोस्ट मैट्रिक छात्रवृति योजना में धनराशि बढाना सराहनीय कदम : अभाविप	28
RESOLUTION : 4/ BHARATIYA VALUE SYSTEM AND CIVILIZATION DRIVING INDIA'S VICTORY AGAINST CORONA PANDEMIC	29
राष्ट्रीय पदाधिकारी (2020–21)	30

वैधानिक सूचना : राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

संपादकीय

देश 71वां गणतंत्र दिवस मनाने की तैयारी में है। गणतंत्र अर्थात संविधान का शासन। नागरिकों के मूल अधिकार पर होने वाले आघात के विरुद्ध न्याय पाने का अधिकार। सत्ता की निरंकुशता को संविधान के दायरे में बांधने के लिये सर्वोच्च न्यायालय की व्यवस्था। सरकार द्वारा बनाये हर कानून की संवैधानिकता को परखने का अधिकार न्यायपालिका को।

आज पंजाब के किसान सरकार द्वारा बनाये कृषि कानूनों के विरोध में आंदोलन कर रहे हैं। वे सड़कों पर उतर आये हैं और दिल्ली की सीमाओं को घेर कर बैठे हैं। सरकार उनसे संशोधन सुझाने के लिये बार-बार कह रही है किन्तु वे कानूनों की वापसी से कम पर मानने को तैयार नहीं। सर्वोच्च न्यायालय ने अभूतपूर्व कदम उठाते हुए एक समिति के गठन की घोषणा की है लेकिन किसानों को इससे भी संतोष नहीं। किसान प्रदर्शन के लिये दिल्ली आना चाहते हैं और सीएए आंदोलन का कड़वा अनुभव ले चुकी केन्द्र सरकार इसके लिये राजी नहीं। जो अराजक तत्व सीएए के आंदोलन के दौरान हिंसा फैलाने के षड्यंत्र रच रहे थे वे किसान आंदोलन के इर्द-गिर्द भी मंडरा रहे हैं। इन लोगों द्वारा किसान आंदोलन को भी हिंसा की ओर धकेलने की संभावना से भी इनकार नहीं किया जा सकता। सरकार इसी से सशंकित है।

दुर्भाग्य से विपक्ष में गंभीर नेताओं की संख्या लगातार घट रही है और विभिन्न राजनैतिक दलों में नयी पीढ़ी का नेतृत्व राष्ट्रीय चिंतन से परे और दूरदृष्टि के अभाव से ग्रस्त है। उसकी नजर तात्कालिक लाभ पर है और इसके लिये वह कुछ भी करने को तैयार है। दिन-प्रति दिन इसके उदाहरण दिखाई दे रहे हैं।

किसानों का आंदोलन, उसे राजनैतिक तत्वों का समर्थन और उनके बीच अराजक तत्वों का जमावड़ा, यह तीनों अपनी जगह। महत्वपूर्ण प्रश्न यह कि सर्वोच्च न्यायालय के सक्रिय होने के बाद भी आंदोलनकारी उसकी पहल को स्वीकार करने के प्रति असमंजस में क्यों हैं ? दूसरा, अगर सच में नये कानून किसानों का अहित कर सकते हैं तो न्यायपालिका को उसके परखने के लिये जरूरी समय क्यों नहीं दिया जाना चाहिये ? तीसरा, अगर नये कानून इतने ही आपत्तिजनक हैं तो शेष देश के किसान इसमें शामिल क्यों नहीं हो रहे हैं? और अंतिम, क्या आवागमन को बाधित कर, चुनिंदा कंपनियों की संपत्ति को नुकसान पहुंचा कर और पहले से कोरोना की मार झेल रहे उद्योग जगत को चोट पहुंचा कर क्या किसानों का भला संभव है ?

राजनीति से परे, न्यायपालिका पर आस्था बनी रहना गणतांत्रिक व्यवस्था के लिये आवश्यक है। इसके लिये न केवल सभी को इसकी पहल करनी होगी बल्कि न्यायपालिका को भी अपनी छवि बदलने के लिये कुछ प्रयास करने होंगे। पीढ़ियों तक चलने वाले मुकदमे. विशेष कर ग्रामीण और निम्न आय वर्ग के लिये किसी भयानक स्वप्न से कम नहीं है। यद्यपि इस दिशा में न्यायपालिका की गति बढ़ी है लेकिन इसकी साख को स्थापित करना इस गणतंत्र दिवस का संकल्प हो सकता हैं।

युवा दिवस और गणतंत्र दिवस की शुभकामना सहित,

आपका
संपादक

66वें राष्ट्रीय अधिवेशन में 1,02,072 कार्यकर्ता हुए सम्मिलित

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 66वें राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन विदर्भ प्रांत के नागपुर स्थित स्मृति मंदिर परिसर, रेशीमबाग में किया गया था। अधिवेशन का उद्घाटन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह सुरेश सदाशिव जोशी उपाख्य भय्या जी जोशी, अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. छगनभाई पटेल, महामंत्री निधि त्रिपाठी, विदर्भ प्रांत के अध्यक्ष योगेश, मंत्री रवि एवं स्वागत समिति अध्यक्ष संजीव चौधरी ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। स्वागत समिति के अध्यक्ष संजीव चौधरी ने स्वागत भाषण में कहा कि सबसे पहले इस नागपुर नगरी की ओर से आप सभी को तहेदिल से स्वागत करता हूं। उन्होंने नागपुर नगरी का संक्षिप्त परिचय भी दिया। उन्होंने कहा कि कुछ अहसास ऐसे होते हैं जिसे सिर्फ महसूस किया जाता है, बयां नहीं।

उद्घाटन समारोह के पूर्व अभाविप के तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. एस. सुबैय्या एवं महामंत्री निधि त्रिपाठी ने ध्वजारोहण किया तत्पश्चात महामंत्री प्रतिवेदन प्रस्तुत किये गये। महामंत्री प्रतिवेदन के बाद राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महामंत्री का चुनाव संपन्न कराये गये। निर्वाचन अधिकारी प्रा. उमा श्रीवास्तव ने नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. छगनभाई पटेल एवं पुनर्निवाचित निधि त्रिपाठी को सम्मानित किया। तीन बजे उद्घाटन समारोह का आयोजन हुआ, शाम के समय राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान का आगामी परिस्थिति एवं अपने कार्य का स्वरूप विषय पर भाषण हुआ। अधिवेशन के दूसरे दिन यानी 26 दिसंबर 2020 को युवा पुरस्कार समारोह का आयोजन किया गया था, जिसके मुख्य अतिथि केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी

थे। समारोह के बाद व्यवस्था परिचय एवं उसके बाद अभाविप की पुरानी कार्यसमिति को भंग कर नई कार्यसमिति का गठन किया गया, जिसकी घोषणा राष्ट्रीय अध्यक्ष छगनभाई पटेल ने किया। अधिवेशन का समापन सत्र में अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान ने कोविड महामारी के सभी नियमों का पालन करते हुए अधिवेशन को सफल बनाने के लिए नागपुर के सभी कार्यकर्ताओं को बधाई दी। कोरोना के दिशानिर्देशों के कारण इस बार अधिवेशन में केन्द्रीय समिति के सदस्य ही उपस्थित हुए थे लेकिन राष्ट्रीय अधिवेशन का सजीव प्रसारण (वर्चुअल लाइव प्रसारण) किया गया था। देश भर के 2907 से स्थानों पर अधिवेशन का सजीव प्रसारण किया गया था। प्राप्त आंकड़े के मुताबिक सजीव प्रसारण से 1,02,072 कार्यकर्ता अधिवेशन से जुड़े। इस प्रकार हम इसे अभाविप का सबसे छोटा और सबसे बड़ा अधिवेशन कह सकते हैं। ■

मातृभूमि आराध्य हमारी, राष्ट्रभक्ति है प्रेरणा : निधि त्रिपाठी

अभाविप की राष्ट्रीय महामंत्री ने अपने संबोधन की शुरुआत "मातृभूमि आराध्य हमारी, राष्ट्रभक्ति है प्रेरणा। ईश्वर का है कार्य हमारा, जीवन की संकल्पना।।" से की। उन्होंने नागपुर को उक्त भाव को पल्लवित और पोषित करने वाली भूमि बताया। कोरोना संकट में अभाविप के समक्ष उत्पन्न चुनौतियों के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि कोरोना की जब शुरुआत हुई तो सबके मन में यह संशय था कि आखिर छात्र गतिविधियां कैसे संचालित होगी? ऐसे समय में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने समाधान के मार्ग को अपनाया। कोरोना काल में विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता अपनी जान की परवाह न करते हुए लोगों की सेवा में लगे रहे। यहां तक कि परिषद ने प्रशासन को पत्र लिखकर कार्यकर्ताओं की सूची दी और कहा कि जहां कहीं भी इस विषम परिस्थिति में हमारी जरूरत हो, हम सहभागिता के लिए तैयार हैं। विद्यार्थी परिषद वह छात्र संगठन है जो छात्रों को दिशा प्रदान करने का काम करती है।

कोरोना के कारण जब विद्यालय-विश्वविद्यालय बंद हो गये। ऐसे समय मे साधनहीन विद्यालयीन छात्रों के लिए अभाविप के द्वारा 'परिषद की पाठशाला' शुरू की गई। बस्तियों में जाकर कार्यकर्ताओं ने पाठशाला का आयोजन कर विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम की पढ़ाई

के साथ परंपरा और संस्कृति से भी परिचित कराया। 'परिषद की पाठशाला' के प्रभाव को बताते हुए उन्होंने कहा कि इससे बच्चों के दैनिक क्रियाकलापों में भी बदलाव आया । एक शराबी पिता को जब उसके बच्चों ने सुबह जगने के तुरंत बाद पैर छूकर प्रणाम किया तो वह काफी भावुक हो गया और शराब पीना छोड़ दिया। लॉकडाउन के दौरान एक गर्भवती महिला को तत्काल रक्त की आवश्वकता पड़ने पर हमारे कार्यकर्ताओं ने पहाड़ों के दुर्गम रास्तों में 25 किलोमीटर पैदल चलकर रक्तदान कर मां और नवजात शिशु की जान बचाई। सेवा परिषद का संस्कार है। ■

स्वार्थी और आत्मकेन्द्रित रहना हमारे देश का स्वभाव नहीं: भय्या जी जोशी

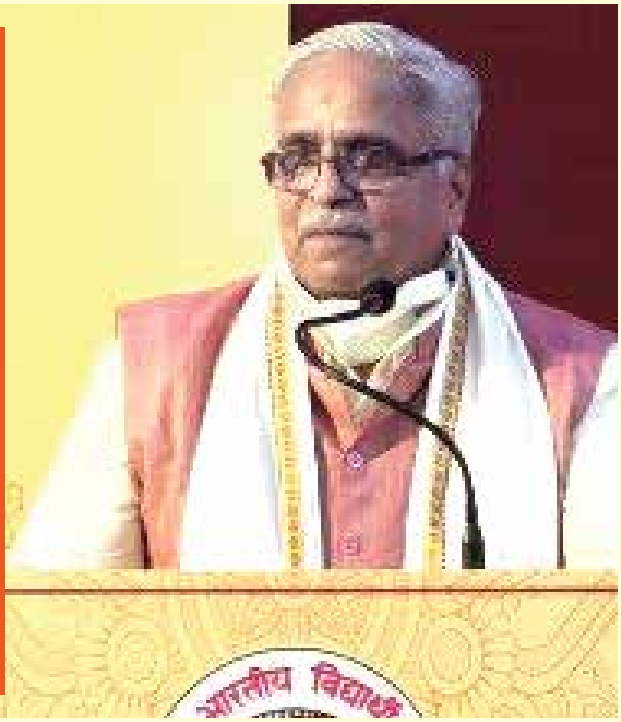

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 66वें राष्ट्रीय अधिवेशन के उद्घाटन समारोह के दौरान अपने संबोधन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह सुरेश सदाशिव जोशी उपाख्य भय्या जी जोशी ने कहा कि एक अद्भूत कालखंड से हमलोग गुजर रहे हैं, कभी सोचा नहीं था कि ऐसा समय भी आयेगा। इस देश में रहने वाले भिन्न– भिन्न भाषा, जीवनशैली वालों संकट के दौरान अपने दायित्व का निर्वहन किया और कोरोना रूपी वैश्विक महामारी संकट से उबर पाने में काफी सहयोग मिला। दुनिया के किसी भी देशों में समाज की इस तरह की भूमिका नहीं रही। समान्यतः लोग(देश) ने सोचा यह सरकार का काम है लेकिन भारतीयों ने सामाजिक दायित्व का संदेश दिया, मैं मानता हूं यह हमारे देश की पहचान है। हम सभी सौभाग्यशाली हैं कि भारतभूमि में हमारा जन्म हुआ है। हम यहां बैठे हुए सभी लोग अपने आपको भाग्यशाली समझते हैं। इसके पीछे कई कारण है एक तो हम सबका जन्म भारत में हुआ, जो भूमि देवताओं की भूमि यानी पुण्यभूमि मानी गई। दूसरा, हम सबका जन्म ऐसे कालखंड में हुआ, जब यह देश स्वतंत्र देश कहलाने का अधिकारी बना। स्वतंत्र देश का स्वतंत्र नागरिक बने। हमारे पूर्वजों ने गुलामी की जिंदगी जी, उन्हें यह सौभाग्य नहीं प्राप्त हो पाया। स्वामी विवेकानंद ने भारत के संदर्भ में कहा है कि जिसे मोक्ष प्राप्त करना होता है उसे अंतिम जन्म यहीं पर लेना होता है। यह अभिमान का विषय है कि हमलोगों को ईश्वर ने ऐसे पवित्र पुण्यभूमि पर मनुष्य रूप में भेजा है। एक श्रेष्ठ विचार और संस्कृति हमें विरासत के रूप में मिला।

रा. स्व. संघ के सरकार्यवाह ने अभाविप कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि यहां बैठे हुए सभी लोग के लिए एक और सौभाग्य की बात है कि हम ऐसे परिवर्तन के कालखंड में जी रहे हैं, अनुभव कर रहे हैं जब देश अपनी दुर्बलताओं को त्याग कर पुनः गौरव को पाने की दिशा में बढ़ रहा है। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद जैसे राष्ट्रीय विचार वाले संगठनों के लिए विशेष गर्व की बात यह है कि हम परिवर्तन के कालखंड के हम केवल मूक साक्षी नहीं बल्कि परिवर्तन को गति देने वाले व्यवस्था हैं। हमलोग इस राष्ट्र के पुनर्निर्माण के काम का हिस्सा हैं। कुछ लोग पुनर् शब्द को छोड़ देते हैं और राष्ट्रनिर्माण की बात करते हैं परंतु हम जानते

हैं कि हम कोई राष्ट्र का निर्माण नहीं करने जा रहे हैं। यह राष्ट्र पहले से है। पुरातन समय से है। राष्ट्र के पुनर्निमार्ण में लगे हैं। इस बात के विविध संदर्भ हैं। सर्दभों को समझकर इस राष्ट्र के पुनर्निमार्ण में मेरी और हमारी क्या भूमिका है, इसको समझने का और उस भूमिका को निर्वहन करने का का संकल्प लेकर चले हैं। हम क्या चाहते हैं? हमारा स्वप्न क्या है ? एक सशक्त भारत विश्व पटल पर स्थापित हो, स्वाभिमानी भारत हो, सार्वभौम और स्वावलंबी हो। इन भावों का हमारे विचारों में संक्रमण हुआ है। उन्होंने कहा कि संक्रमण केवल कोरोना का नहीं होता है, अच्छे बातों का भी होता है । इस तरह के अच्छे विचारों का जिनके हृदय/अंतःकरण में संक्रमण हुआ है। जो संक्रमण हमें बल प्रदान करेगा, इस प्रकार का जिनका जीवन है , रचना है, मानसिकता है इस मन के लोग यहां पर बैठे हैं।

भारत की भूमिका को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि जब कोई हमें पूछता है कि भारत की भूमिका क्या है ? प्राचीन काल के ऋषि – मुनियों से आज तक हमने भारत के संदर्भ में यही सुना है कि हमारा देश कभी आत्मकेन्द्रित व स्वार्थकेन्द्रित नहीं रहा है। भारतीय समाज प्रतिकूलता और अनुकूलता में भी समस्त विश्व के कल्याण की भावना के साथ जीता आया है। इसलिए इस प्रकार की भूमिका निर्वहन करने वाला भारत, विश्व के कल्याण करने की भावना केवल हमारा स्वप्न नहीं है अपितु हम सबकी जीवन शैली है। हम सबका कर्तव्य है कि इस भूमिका को लेकर हम चलें। जब हम वर्तमान पीढ़ी की बात करते हैं तो पाते हैं कि यह पीढ़ी विश्व कल्याण की कामना करने वाला नहीं बल्कि विश्व कल्याण की मार्ग को प्रशस्त करने वाला भारत की भूमिका में तैयार हो रहा है। विश्व कल्याण के लिए भारत को खड़ा करने, इस तत्व व सिद्धांत का रक्षण करना जिसका संकल्प है, ऐसे हमलोग हैं।

स्वामी विवेकानंद ने कभी कहा था कि विश्व में धर्म तभी तक शेष है जब तक भारत में धर्म हैं। जिस दिन भारत में धर्म नहीं रहेगा उस दिन से विश्व में धर्म का अवशेष भी नहीं रहेगा। कभी कभी भ्रमित अवस्था में आज की पीढ़ी सोचती है कि हमें अमेरिका चीन रूस बनना है परंतु भारतीय मनीषी कहते हैं कि हमें भारत का ही बनकर रहना है न कि अमेरिका और चीन बनना । हमलोग भारत को भारत बनाये रखने की संकल्प को लेकर जीते हैं। हम ऐसी एक शक्ति के रूप में बनकर खड़े रहना चाहते हैं जो सकारात्मक है। हम कहते हैं कि कोई भी हमारा पराभव न करे सके, ऐसी हमें शक्ति चाहिए। यह सकारात्मक भाव है। हमने कभी भी शक्ति की अराधना दूसरों के ऊपर अन्याय अत्याचार करने के लिए न सोची और न यहां का ऐसा व्यवहार रहा। हम

तो कहते हैं कि शक्ति ऐसी हो जो दुर्बलों की रक्षा करने में काम आये। संघ के संस्थापक परम पूजनीय केशव बलिराम हेडगेवार जी ने संघ की स्थापना के समय कहा कि हम ऐसा भारत/हिंदू राष्ट्र बनाना चाहते हैं, जो दुनिया के छोटे – छोटे देशों को सार्वभौम बनाये रखने में नेतृत्व करेगा। विश्व के सारे देशों को नेतृत्व सरंक्षण प्रदान करेगा। विश्व का नेतृत्व करेगा इस प्रकार का भारत चाहिए। हम शक्ति की आराधना अवश्य करते हैं और ये शक्ति विश्व के कई प्रकार के नकारात्मक तत्व को समाप्त करने का संकल्प लेकर चली हुई शक्ति है। तभी विश्व में शांति स्थापित होगी। इसलिए भारत को ईश्वर के द्वारा दिया यह कार्य है। इस कार्य का निर्वहन करने की शक्ति बनाये रखने के लिए हर पीढ़ी ने चिंतन किया है। इस प्रकार के भारत को बनाने के लिए छात्र जीवन से संकल्प लेकर चले हुए हमलोग हैं।

हम जानते हैं कि कोई भी देश बड़ा होता है तो उस देश का जो समान्य व्यक्ति है उसके आधार पर बड़ा होता है। कहा जाता है कि समान्य व्यक्ति में जो शक्ति होती है वही राष्ट्र की शक्ति होती है। हमलोगों का प्रयास रहता है कि भारत के समान्य लोगों का सामर्थ्य बढ़ें, शक्ति बनी रहे। हम कई प्रकार गीतों के द्वारा भाव प्रकट करते हैं कि सब समाज को साथ लेकर चलना है। इससे देश का उत्थान होगा, राष्ट्र का रक्षण होगा। विश्व गुरु भारत तभी बनेगा जब समान्य व्यक्ति का सामर्थ्य बढ़ेगा। कई प्रकार की शक्तियां भारत में विराजमान हैं। हजारों वर्षों की गुलामी की कारण हम सब खो चुके हैं। हमारे अंदर भिन्न - भिन्न प्रकार की क्षमता है। आज जनसंख्या के दृष्टिकोण से हम सबसे बड़ा देश नहीं है फिर भी कहा जाता है कि विश्व का हर छठा व्यक्ति भारत है। इतनी बड़ी जनसंख्या शक्ति इस देश के अंदर है। कभी - कभी हम खुद को छोटा मानते हैं। दूसरा कोई छोटा मानता है यह समस्या नहीं है लेकिन जब हम खुद ही अपने को छोटा मानने लगे, समस्या है।

भारतीय ज्ञान चिंतन परंपरा को बारे में बताते हुए श्री जोशी ने कहा कि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों का ज्ञान यहां से प्रसारित हुआ है। ज्ञान वितरित करने की है न की संग्रहित करने की, ऐसा हम मानते हैं। लोग पेटेंट बनाने की बात करते हैं, पेटेंट बनाने पर जोर लगा देते हैं लेकिन हम इसके खिलाफ हैं क्योंकि हमारा मानना है कि ज्ञान तो बांटने की चीज होती है। ज्ञान चेतना युक्त सभी प्राणियों के लिए है तो ज्ञान को हम ताले में कैसे बंद कर सकते हैं, अधिकार (पेटेंट) बना सकते हैं। भारतीय ऋषि – मुनियों, मनीषियों के द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी ज्ञान मिलता आया है, यह हमारी शक्ति है। सबसे बड़ी शक्ति अगर हम मानेंगे तो वह इस समाज को जीवन देखने की दृष्टि है। इस दृष्टि के आधार पर जीवनशैली विकसित होती आयी है, जो श्रेष्ठ है। किसी महापुरूष ने कहा है कि विश्व के अंदर सबसे अच्छा व्यक्ति भारत का है। अच्छा मतलब उसके जीवन शैलियों का मूल्यांकन। इन मूल्यों की रक्षा होती आई है यह हमारी विशेषता है। यह कोई छोटी – मोटी बात नहीं है, यह हमारी शक्ति है।

यहां पर हमेशा देने का ही संस्कार प्राप्त होता आया है लेने का नहीं। अगर हम हजारों वर्षों के इतिहास पर गौर करें तो यहां के राजा – महाराजा कभी भी अपनी सेना लेकर किसी राष्ट्र पर कब्जा करने नहीं गये हैं। जो गये हैं वो अपनी श्रेष्ठ ज्ञान को लेकर उसे फैलाने के लिए गये हैं। शस्त्र लेकर नही गये , शास्त्र लेकर गये हैं। शास्त्र लेकर जाने की परंपरा को भारत ने हमेशा निभाया है। अगर हमें कुछ करना ही है तो शास्त्र ले जाने की परंपरा को निभाना है। योग गुरु स्वामी रामदेव के एक अनुभव को साझा करते हुए उन्होंने कहा कि स्वामी रामदेव जब इंग्लैंड के राजपरिवार को योग सीखाने गए तो महारानी ने उनसे पूछा कि आपकी क्या विशेषता है ? योग गुरु रामदेव ने कहा कि आपने हमें 150 वर्ष गुलाम रखकर राज किया और अभी हम आपके स्वास्थ के राज्य को देने आये हैं, यही हमारी परंपरा है। इन सब बातों को ध्यान में रखकर हमारे अंदर श्रेष्ठ भाव होना चाहिए। मैं समझता हूं विगत कुछ वर्षों से जो हमारे अंदर हीन ग्रंथि बसी है उस हीनता निकलने का इससे ज्यादा अच्छा मार्ग नहीं लगता है। अलग – अलग घटनाओं को अगर हम देखें तो एक समय ऐसा भी था जब हमारे देश में अपने नागरिकों को पेट भरने का अन्न नहीं होता था, दूसरो पर निर्भर रहते थे लेकिन आज हमारे खाद्यान भरे पड़े हैं। दूसरे देशों को निर्यात कर रहे हैं। अपने देश की सुरक्षा के लिए हमें दूसरे देश के हथियार पर निर्भर रहना पड़ता था लेकिन अब हम स्वावलंबी बनने की ओर बढ़ चुके हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हमने पांच लड़ाईयां लड़ी, चार जीते एक हार गये वह भी नेताओं की गलतियों के कारण। विज्ञान, तकनीक, अर्थ, शिक्षा, स्वास्थ्य इत्यादि सभी क्षेत्रों में हमारा विकास हुआ,

हमारे देश में विश्व स्तर पर सुविधा मौजूद है। उल्टी गिनती शुरू हुई है भारत के स्वास्थ्य और शिक्षा की बेहतरी के लिए प्रवासी भारतीय पुनः अपने देश लौट रहे हैं, क्या यह खुशी की बात नहीं है ? आवागमन की सुविधायें बढ़ चुकी है, संवाद – संपर्क के साधन इतने बढ़े चुके हैं। 130 करोड़ के देश में 80 करोड़ से ज्यादे लोग मोबाईल का उपयोग करते हैं। अन्य क्षेत्रों में भी दुनिया के साथ चल रहे हैं, लेकिन इसे पर्याप्त न मानते हुए प्रयासरत रहना चाहिए। तथाकथित विकसित देशों की स्पर्धा में भारत भी कहीं न कहीं शामिल है, यह कैसे संभव हुआ ? यह संभव हुआ भारत के नेतृत्वकर्ता के कारण जो भारत के जन समान्य का नेतृत्व करते हैं। तमिलनाडु का मेरा एक अनुभव है। ग्रामीण क्षेत्र के चार – पांच युवक थे, उन युवकों से मैंने पूछा कि आपको क्या सीखने की इच्छा है तो उन्होंने बताया कि मुझे हिंदी सीखना है। तमिलनाडु जैसे राज्य जहां पर हिंदी का विरोध होता है वहां के युवक हिंदी सीखने की बात करना आश्चर्य की ही बात हो सकती है, मैंने जब इसका कारण पूछा तो उसका जवाब था कि हमारे देश के प्रधानमंत्री विश्व के अलग – अलग देशों में जाते हैं और दुनिया को ललकारते हैं। वे हिंदी में क्या बोलते हैं समझ नहीं आता है ? प्रधानमंत्री के बातों को समझने के लिए हमें हिंदी सीखना है। यह एक समान्य व्यक्ति की सोच है। और हम सबको विश्वास है कि दुनिया के अनेक क्षेत्रों के स्पर्धा में भारत का स्थान बढ़ा है। हमारे महापुरुषों ने जो भारत के प्रति स्वपन देखे हैं निश्चित रूप से सामर्थ्य और शक्ति में भारत आगे बढ़ा है।

मैं बार – बार ये कहना चाहूंगा कि हीनता की भावना से जल्द से जल्द बाहर हों। हमारे देश की श्रम शक्ति का उपयोग विभिन्न देश अपने विकास के लिए करते हैं। विविध क्षेत्र में काम करने वाले हमारे देश के लोग दुनिया के अलग – अलग देश जाते हैं जब वहां से लौटकर आते हैं और हम जब उससे पूछते हैं कि क्या सीखकर आया तो वे कहते सीखा क्या, यह तो नहीं बता सकता लेकिन पैसे अच्छे कमाकर आये हैं ? दुनिया के देश अपने ज्ञान को दूसरों को नहीं देना चाहते वे केवल हमारे श्रम शक्ति का उपयोग करते हैं। इसलिए हमें हीनता की भावना से ऊपर उठकर अपनी शक्ति को पहचानने की जरूरत है।

हमारे पास प्रचुर मात्रा में प्राकृतिक संपदा है। दुनिया के विभिन्न देश यहां आकर हमारे प्राकृतिक खनिज संपदाओं का दोहन करते हैं । क्या हम अपने प्राकृतिक संपदा का दोहन होने देंगे ? दुनिया के लोग भारत को बड़ा बाजार मानते हैं, क्या हम अपने देश को सिर्फ बाजार बनाना चाहेगें ? आत्मनिर्भर भारत की अभियान शुरू होने के बाद लोगों की मानसिकता में सुधार आया है। भारत को आत्मनिर्भर बनाने का काम सिर्फ किसी एक व्यक्ति, समाज या स्तर तक लोगों के लिए नहीं हीं। भारत तभी आत्मनिर्भर बनेगा जब जनसमान्य की भागीदारी होगी। कोई भी दूसरा देश किसी भी देश का भला करने के लिए नहीं बैठा है, हमें हमारे राष्ट्र का भला खुद करना होगा। भारत विश्व गुरु तभी बन पायेगा जब समान्य लोगों का विश्वास इस पर दृढ़ होगा। निर्णय लेने का समय आ चुका है। हमें तय करना होगा कि क्या भारत किसी के नियंत्रण में चलेगा ? क्या भारत किसी के कृपा पर निर्भर रहेगा ? हमारा देश किसी के पास न झूकेगा और न किसी नियंत्रण से चलेगा, ऐसे सोच और नेतृत्व को दृढ़ करना होगा। दुनिया के देश दूसरे को दुखी कर सुख का अनुभव करता है लेकिन भारत का चिंतन सबके सुख के कामना की रही है। पूर्व राष्ट्रपति अब्दूल कलाम ने कहा है कि जल या हवा में चलने वाले जहाज के लिए एक दिशा निर्देश की जरूरत होती है तो क्या मानव रूपी मशीन को दिशा दर्शन की जरूरत नहीं है ? हमारे देश का सौभाग्य रहा है कि मानव रूपी मशीन को दिशा दर्शन के लिए समय – समय पर अनेको जीता जागता मनीषी आये। क्या स्वामी विवेकानंद दिशा निर्देशक नही हैं ? क्या लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, डॉ. अंबेडकर वीर सावरकर हमारे देश का निर्देशक नहीं है ? हमारे देश में दिशा दर्शन करने वालों की कमी नहीं है, हमें उनके बताये मार्ग पर चलने की आवश्यकता है। विश्व में परस्पर बंधुत्व और सहयोग का भाव विकसित हो इसके लिए भारत को ही नेतृत्व करना होगा। महाभारत में महात्मा विदुर कभी भी उचित कहने से नहीं डिगे। सत्ता में कौन बैठा है इसकी परवाह किये बगैर उचित – अनुचित कहने का भाव विकसित करना पड़ेगा। पतन की ओर जाने वाला कालखंड अब खत्म हो चुका है। अब चक्र घूम चुका है इस गतिमान कालखंड के सहभागी बनें। परिवर्तन की प्रक्रिया और चेतना को समझते हुए आत्मविश्वास के साथ हमें आगे बढ़कर देश को आगे ले जाना होगा। चुनौतियों के साथ संघर्ष करते हुए पुरूषार्थ के साथ आगे बढ़ें। ■

वैश्विक संकट में उम्मीद की किरण बनी भारत की आध्यात्मिक विरासतः छगनभाई पटेल

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. छगनभाई पटेल ने कहा कि वैश्विक संकट में दुनिया के देशों ने हार मान ली, उसी समय हमारी आध्यात्मिक विरासत उम्मीद की किरण बनकर आई है। सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करने की परंपरा काम आई है। दादी मां की औषिधियां, मसाले इस कोरोना से बचने में उम्मीद बन रहा है। पूरी दुनिया नमस्ते संस्कार को अपना रहा है। उन्होंने कहा कि माना कि 'अंधेरा घना है लेकिन दीया जलाना कहां मना है।' कोरोना काल के चुनौतियों के बीच अभाविप ने समाधान का मार्ग निकाला तकनीकी का उपयोग कर इस अधिवेशन से लाखों कार्यकर्ता जुड़े हैं। पटेल ने अपने संबोधन के प्रारंभ में कोरोना के कारण जान गंवाये डॉक्टर, स्वच्छता कर्मी, पुलिसकर्मी आदि सेवा में सभी कोरोना योद्धाओं को नमन किया।

डॉ. पटेल ने कहा कि वर्ष 2020 ने जहां हमें गम दिया है वहीं कुछ ऐसे कार्य भी हुए जिससे हम गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। वर्ष 2020 में भारतीय मानस के स्वाभिमान प्रतीक भगवान राम के मंदिर का भूमि पूजन हुआ, 34 साल बाद देश को राष्ट्र केन्द्रित शिक्षा नीति मिली। वर्षों से अभाविप द्वारा शिक्षा में भारतीयकरण, स्वदेशीकरण इत्यादि का मांग किया जा रहा था। आज मुझे विश्वास हुआ कि शिक्षा नीति साकार रूप से आई है।

अभाविप के शिल्पकार प्रा. यशवंत राव केलकर कहा करते थे कि अच्छे नागरिक बनकर जीना बाकी सबको प्रेरणा देकर अच्छा नागरिक बनाना देश भक्ति है । उन्होंने परिषद कार्यकार्यताओं को 'पूर्व योजना – पूर्ण योजना' का सूत्र दिया। परिषद के कार्यकर्ता प्रा. यशवंतराव के सूत्र को अमल करते हुए विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ रहे हैं। युवा पुरस्कार विजेता रहे इम्तियाज अली का उदाहरण देते हुए अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि इम्तियाज अली ने परिषद में जो कुछ सीखा उसे अपने जीवन में उतारा फलस्वरूप ठोस कचड़ा प्रबंधन के क्षेत्र में अच्छा काम कर रहे हैं, लोगों को रोजगार भी मुहैया करवा रहे हैं। परिषद के कार्यकर्ता विभिन्न मांगों को लेकर विश्वविद्यालय/महाविद्यालय प्रशासन के खिलाफ आंदोलन करते हैं, बहस करते हैं दूसरे ही दिन उनके साथ बैठकर चाय पीता है। रचनात्मकता की यह अनूठी मिसाल है। सन 2000 में कर्णावती में हुए अभाविप के एक रैली का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि अभाविप के द्वारा महानगर में रैली का आयोजन किया गया। रैली संपन्न होने के बाद मैंने दुकानदारों से बात कि उनलोगों ने अपना अनुभव बताया कि अमूमन रैली में दुकानों को बंद, यातायात मार्गों को लोग अवरूद्ध कर दिया जाता है, न मानने पर तोड़-फोड़ किया जाता है लेकिन विद्यार्थी परिषद के द्वारा इतने बड़े रैली में किसी भी दुकान को न बंद किया गया और न ही छुया या तोड़ा गया। यह अनोखा प्रदर्शन था।

गीता जयंती के दिन पर एक उदाहरण देना चाहते हूं कि हमारे दैनिक जीवन में उपयोग होने वाले माइक्रोवेब, वॉशिंगमशीन इत्यादि के लिए मैन्यूअल दिया रहता है, जिसे पढ़कर हम कुशलतापूर्वक उसका संचालन कर सकते हैं। हमारा शरीर सबसे मुश्किल मशीन है। ऐसे मशीन को चलाने के लिए अगर कोई मैन्यूअल है तो हमें लगता है वह भगवद गीता है। अगर हम गीता में दिये मैन्यूअल पर चलेंगे तो हमारा जीवन आसान हो जायेगा।■

Build Indigenous network of online research content: ABVP

Committee should be constituted to formulate an Open Access Policy

Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad (ABVP) demands the building of an indigenous network for online research content along with the constitution of a committee to draw up a framework for open access to the scientific research literature in India.

Recently, three foreign publishing giants, namely Elsevier, Wiley and American Chemical Society, which, together, represent more than a quarter of the world's peer-reviewed scientific, technical and medical literature have sued Sci-Hub and Lib-Gen, foreign websites that provide free downloads of published academic papers in India, for copyright infringement in the Delhi High Court.

Despite an expenditure of 205 million dollars or 1500 crore rupees on journal subscriptions by the Government of India, the issue of comprehensive, last-mile access continues to persist. ABVP believes the adoption of 'One Nation, One Subscription' model which suits everyone needs, also suggested by the Principal Scientific Advisor Prof. K. VijayRaghavan, is welcome move but along with this building Indigenous network of online research content must be emphasised.

ABVP strongly suggests that while open-access should be mandatory for publications born out of the utilisation of public research grants, measures must be instituted to enhance the journal impact factor of Indian journals to make them globally competitive.

NidhiTripathi, National General Secretary, ABVP, said, "International cooperation along with urgent domestic measures are needed to address the issue of global inequality in access to scientific research journals. Since the access to existing scientific literature will determine the progress of scientific research in India, the contours of the 'Open-Access' policy and the 'One Nation, One Subscription' model must be drawn up by a dedicated committee of experts to achieve universal access as soon as possible." ■

जेएनयू में हिंसा के खिलाफ अभाविप ने निकाली पदयात्रा, वामपंथी हिंसा के खिलाफ दिया कड़ा संदेश

5 जनवरी 2020 को पेरियार व अन्य हॉस्टलों पर अंजाम दिए गए वामपंथी हिंसा की निंदा करते हुए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद(अभाविप जेएनयू) ने 5 जनवरी 2021को जेएनयू के साबरमती ढाबे से लेकर मुख्य द्वारा तक एक शांतिपूर्ण पदयात्रा का आयोजन किया। इस पदयात्रा का मकसद जेएनयू पर हावी हिंसक वामपंथी छात्रों व प्रोफेसरों को एक कड़ा संदेश देना था। अभाविप की तरफ से इस पदयात्रा के जरिए संदेश दिया गया कि वामपंथी विचारधारा के लोगों की तरफ से की गई हिंसा के चलते राष्ट्रवादी ताकतें विचलित नहीं होने वाली हैं। इस पदयात्रा में कई अन्य संगठन जैसे जेएनयू टीचर्स फेडरेशन, विवेकानंद विचार मंच, अम्बेडकर विचार मंच आदि ने भाग लिया। सभी संगठन ने एक स्वर में वामपंथी छात्रों व प्रोफेसरों द्वारा वामपंथी कैम्पस हिंसा का विरोध किया। अभाविप जेएनयू के अध्यक्ष शिवम चौरसिया ने कहा, " यह अत्यंत दुखद है कि किस प्रकार वामपंथी नेताओं ने पिछले वर्ष हिंसा का रुख अपनाया था। अभाविप के कई कार्यकर्ताओं व समर्थकों को लाठी डंडों से मारा गया था। लेफ्ट की हिंसक भीड़ ने आम छात्रों व प्रोफेसरों तक को नहीं छोड़ा था।"

वहीं अभाविप जेएनयू के मंत्री गोविंद डांगी ने कहा, "आज की पदयात्रा को छात्रों से पूर्ण समर्थन मिला क्योंकि सब सच जानते हैं कि उस दिन कैम्पस में क्या हुआ था। परन्तु दुखद व असहनीय ये है कि ना दिल्ली पुलिस और ना ही प्रशासन ने एक साल बीत जाने के बाद भी इस घटना के आरोपियों के खिलाफ कोई कानूनी कार्रवाई नहीं की है।" ■

कोरोना काल में जान की परवाह किये बगैर लोगों की सेवा में लगे रहे अभाविप कार्यकर्ता: निधि त्रिपाठी

अधिवेशन के प्रथम दिन ध्वजारोहण के पश्चात अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की राष्ट्रीय महामंत्री निधि त्रिपाठी ने कार्यकर्ताओं के बीच अभाविप द्वारा वर्ष भर किये गये कार्यों का उल्लेख किया। प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के पूर्व उन्होंने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 66वें राष्ट्रीय अधिवेशन में देश के विभिन्न भागों से पधारे सभी कार्यकर्ताओं का स्वागत किया। महामंत्री प्रतिवेदन के जरिये 2019 – 20 में अभाविप द्वारा किये गये कार्यों का ब्यौरा देते हुए उन्होंने कहा कि कोरोना रूपी वैश्विक महामारी के चुनौतियों के बीच वैकल्पिक मार्ग बनाते हुए अपने गतिविधियों को मूर्त रूप दिया।। महामंत्री ने कोरोनाकाल में अभाविप कार्यकर्ताओं द्वारा किये गये सेवा कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि जब लोग डर के मारे घर में बैठे थे उस समय भी परिषद के कार्यकर्ताओं ने सरकारी दिशानिर्देश को पालन करते हुए अपने जान की परवाह किये बगैर लोगों की सेवा की। लॉकडाउन होने के बाद प्रवासी छात्रों को घर पहुंचाने में मदद करने की बात हो या राशन पहुंचाने की, रास्ते में जा रहे प्रवासियों को भोजन पैकेट देने हर परिस्थिति में परिषद के कार्यकर्ता डटे रहे। 20 मई 2020 तक प्राप्त जानकारी के अनुसार कोरोना काल के दौरान अभाविप कार्यकर्ताओं ने कुल 30, 10, 115 भोजन पैकेट, 3,17,553 राशन किट तथा 5,84,039 मास्क

जरूरतमंद लोगों को भोजन उपलब्ध कराने हेतु अभाविप कार्यकर्ताओं द्वारा 400 रसोई चलाई गई जो दिन-रात भोजन उपलब्ध कराती रही। कोरोना में तालाबंदी के समय दूसरे राज्यों में फंसे हुए 17171 छात्रों को उनके स्थान तक पहुंचाने में मदद की गई। चिकित्सालय में रक्त की कमी होने पर चिकित्सालयों की सहायता एवं उनके आह्वान पर अभाविप कार्यकर्ताओं द्वारा 5710 यूनिट रक्तदान किया गया तथा माननीय प्रधानमंत्री जी के आह्वान पर समाज कार्य हेतु पीएम केयर में 2,86,83,913 रुपये की सहायता राशि प्रदान की गई।

व्यापक संपर्क अभियान

कोरोना काल में छात्र समुदाय शंकाओं से भरा हुआ तथा असमंजस की स्थिति में था। वर्तमान और आगामी सत्र के विषय में छात्र आशंकित था तथा अपने भविष्य के विषय में अनेकों प्रश्नों से घिरा हुआ था, ऐसे समय में अभाविप ने एक जागरुक छात्र संगठन होने के दायित्व का निर्वाह करते हुए छात्रों विद्यार्थियों की चिंता जानने, आत्मीयता के साथ उन विद्यार्थियों तथा उनके पारिवारिक जनों के स्वास्थ्य की कुशलता. कुशलक्षेम जानने के उद्देश्य से 'व्यापक विद्यार्थी संपर्क अभियान' करने का निर्णय लिया।

11-22 मई 2020 को संपन्न हुए 'व्यापक विद्यार्थी सपंर्क अभियान' को विद्यार्थी परिषद के प्रत्येक कार्यकर्ता ने सहर्ष स्वीकार किया तथा अपनी पूर्ण ऊर्जा के साथ अभियान को सफल बनाने में अपने दायित्व का निर्वाह किया। अभियान के अंतर्गत राष्ट्रीय पदाधिकारी, प्रांत, विभाग, नगर, जिला, विश्वविद्यालय तथा विद्यालय इकाई तक के कार्यकर्ताओं ने फोन के माध्यम से विद्यार्थियों से संपर्क किया। 2 दिन तक चले उस अभियान में प्रत्येक कार्यकर्ता ने 20-20 छात्रों से संपर्क किया। संपर्क करते हुए कार्यकर्ताओं ने वुहान वायरस के विषय में जानकारी तथा छात्र एवं उनके पूरे परिवार का कुशल क्षेम जाना एवं कोविड से बचाव हेतु व्यक्तिगत स्तर पर किए जाने वाले प्रयासों के सुझाव एवं जानकारी के साथ ही शिक्षा एवं आर्थिक जगत के छात्रों के मन में स्थित प्रश्न तथा सुझाव लिए। व्यापक विद्यार्थी संपर्क अभियान के अंतर्गत अभाविप के 55,789 कार्यकताओं ने 8,69,191 छात्रों एवं प्राध्यापकों से संपर्क किया। कोरोना की विशेष परिस्थिति में 4 सितंबर 2020 को ऑनलाइन माध्यम से 2 सत्रों में बैठक संपन्न हुई। जिसमें कोरोना काल के सेवा कार्य, संगठनात्मक विषय तथा तत्काल अभियानों पर विस्तृत चर्चा हुई।

परिषद की पाठशाला

कोरोना की विषम परिस्थितियों में अभाविप के हजारों कार्यकर्ताओं ने अपने प्राणों की चिंता न करते हुए बस्तियों में कोरोना स्क्रीनिंग, भोजन पैकेट वितरण, राशन वितरण, औषधि वितरण, स्थानांतरित श्रमिको की सेवा, रक्तदान, प्लाज्मा दान आदि सेवा के कार्य किये कोरोना काल में शिक्षा जगत में अनेक अनियमितता दिखी तथा शिक्षा क्षेत्र में सुधार की संभवानाएं भी प्रकट हुईं ।

1986 में आई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के पश्चात लंबे समयांतराल के बाद 29 जुलाई 2020 को शिक्षा मंत्रालय के द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की घोषणा हुई। मई 2019 में NEP का प्रथम ड्राफ्ट आया, जिसपर देश भर से सुझाव लिए गए। करीब 2.5 लाख ग्राम पंचायतों और छात्रों व अभिभावकों से प्राप्त सुझावों के बाद NEP लागू होने वाली नीति बन गयी।

कोरोना काल में सभी शैक्षणिक संस्थान बंद है ऐसे में छात्रों का वर्ष व्यर्थ न हो इस हेतु शैक्षणिक संस्थाओ द्वारा ऑनलाइन कक्षाऐं प्रारंभ की गई परंतु समाज में सभी छात्र के पास लैपटॉप कंप्यूटर अथवा मल्टीमीडिया मोबाइल नहीं है । ऐसे में उन छात्रों की शिक्षा बाधित न हो ऐसा विचार करते हुए अभाविप के कार्यकर्ताओ के द्वारा "परिषद की पाठशाला" आरम्भ की गई। परिषद की पाठशाला के द्वारा अभाविप कार्यकर्ता अपने गांव,

नगर अथवा शहर की झुग्गियो में रहने वाले अभावग्रस्त बच्चो को शिक्षा देने का प्रण लिया । आज पूरे देश में अभाविप की परिषद की पाठशाला चल रही है। आज देशभर में कुल 716 विद्यार्थी कार्यकर्ताओं द्वारा 967 पाठशालाएं चलाई जा रही है जिससे 7726 विद्यार्थी लाभान्वित हुए है. तथा आज भी छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे है। कक्षा आरम्भ होने से पूर्व प्रार्थना, समाप्त होने पर राष्ट्रगान, योगासन, देशभक्ति गीत अदि का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। पाठशालाओ में महापुरुषों की जयंती अथवा पुण्यतिथि पर पुष्पांजलि, उनका चरित्र चिंतन, विभिन प्रकार की प्रतियोगिता, पुस्तक वितरण, कपड़ों का वितरण आदि कार्य किये जा रहा है ।

नागरिकता संशोधन अधिनियम जागरूकता

नागरिकता संशोधन अधिनियम के समर्थन में देशभर में विविध प्रकार की गतिविधियां संपादित की गई जिनमें रैली, भाषण, प्रदर्शन, तिरंगा यात्रा, घर-घर जाकर जनजागरण, हस्ताक्षर, सोशल मीडिया पर सीएए के विषय में सकारात्मक संदेश, प्रांतों तथा क्षेत्रीय भाषाओं में पत्रक तथा साहित्य का वितरण, नुक्कड़ नाटक, प्रदर्शन आदि कार्यक्रमों के द्वारा समाज को जागरुक किया गया। अभाविप कार्यकर्ता दिल्ली में रह रहे पाकिस्तानी शरणार्थियों के कैंप में जाकर उनके साथ सीएए की खुशियां साझा की तथा पाकिस्तानी शरणार्थियों को जेएनयू बुलाकर उन्हें मंच दिया तथा उनकी व्यथा को छात्र समुदाय तक पहुंचाया । जम्मू कश्मीर प्रांत द्वारा सुचेतगढ़, चीनोर, अखनूर आदि स्थानों पर रहने वाले मुस्लिम गुर्जर बकरवाल समुदाय के साथ 55 नुक्कड़ सभाएं, 4 मस्जिदों में कार्यक्रम आदि संपन्न हुए।

केंद्रीय कार्य समिति बैठक का आयोजन दिनांक 25-26 जनवरी 2020 को गोरखपुर (गोरक्ष) में सम्पन्न हुई। बैठक में नागरिकता संशोधन अधिनियम (CAA), Meaningful Campus, NEP इत्यादि विषयों पर व्यापक चर्चा हुई।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020

1986 में आई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के पश्चात लंबे समयांतराल के बाद 29 जुलाई 2020 को शिक्षा मंत्रालय के द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की घोषणा हुई। मई 2019 में NEP का प्रथम ड्राफ्ट आया, जिसपर देश भर से सुझाव लिए गए। करीब 2.5 लाख ग्राम पंचायतों और छात्रों व अभिभावकों से प्राप्त सुझावों के बाद NEP लागू होने वाली नीति बन गयी। कस्तूरीरंजन जी की अध्यक्षता में राष्ट्रीय शिक्षा नीति हेतु बनाई गई कमिटी के अथक प्रयासों से प्राप्त प्रथम ड्राफ्ट पर प्रस्ताविक सुझावों के देखते हुए अभाविप ने देश में अन्य कार्यक्रमों के माध्यम से गुरुकुल, मदरसा, विद्यालय, महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय के छात्रों से सुझाव लेते हुए कमिटी को भेजा। सभी के सुझावों तथा सहभागिता के पश्चात student friendly, ट्रांसजेंडर friendly, दिव्यांग friendly, छात्रा friendly, भारतीय भाषाओको सम्मान प्रदान करने वाली शोध को प्रोत्साहित करने वाली राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 हम सभी के समक्ष है । 28 जुलाई 2020 को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की घोषणा होने के पश्चात अभाविप के द्वारा देश भर में वेबीनार, प्रतियोगिता तथा भाषण आदि का आयोजन किया गया।

अभाविप ने इस दौरान छात्र हितों को भी नहीं भूला और शैक्षिक विषयों को लेकर लगातार आंदोलन करते रहे। मेरठ महाविद्यालय में वेबसाईट बंद कर देने से मेरठ महाविद्यालय द्वारा वेबसाईट बंद कर देने से हजारों छात्रों का प्रवेश बाधित हो रहा था। जिसके समर्थन में 453 छात्रों की सहभागिता के साथ आंदोलन कर प्रवेश प्रक्रिया पुनः आरंभ करवायी गयी।महाराष्ट्र प्रांत के नासिक में स्थित सातपुर नगर में कोविड के काल में संदीप विश्वविद्यालय में शुल्क वृद्धि, विलंब शुल्क तथा पुनर्प्रवेश शुल्क लिए जाने के विरोध में उग्र प्रदर्शन किया और प्रशासन ने परिषद की सभी मांगों को स्वीकार किया। मध्य भारत प्रांत द्वारा संपूर्ण प्रदेश में IUMS (Integrated University Management System)के विरोध में 3663 विद्यार्थियों की सहभागिता में आंदोलन हुआ तथा जिला केंद्रों पर राज्यपाल के नाम से कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा। कोरोना काल में केरल के KEAME (Kerala Engineering Architecture Medical Entrance)की परीक्षा में उचित व्यवस्था न होने तथा शुल्क वृद्धि के विरोध में गवर्नर को ज्ञापन सौंपा। काशी प्रांत के BHU (बनारस हिंदू विश्वविद्यालय) में मूल्यांकन विषय में सभी के मध्य संदेह का निवारण करते हुए । अभाविप ने ऑनलाइन सर्वे के माध्यम से 11,325 विद्यार्थियों

का मत संग्रह किया। इसके आधार पर कुलपति को ज्ञापन सौंपा। तत्पश्चात् Open Book परीक्षा प्रणाली से मूल्यांकन संपन्न हुआ। इस तरह अनेको उदाहरण है जिससे परिलक्षित होता कि अभाविप ने अपने आंदोलन, गतिविधियों के जरिये छात्र हितों के मुद्दे को सबसे ऊपर न केवल रखा अपितु उसे समाधन तक पहुंचाया भी।

विवेकानंद जी के जन्म दिन 12 जनवरी से लेकर नेताजी सुभाष चंद्र बोस जी की जयन्ती 23 जनवरी तक के इन 11 दिवसों को अभाविप कार्यकर्ता उत्साह के साथ युवा पखवाड़ा के रूप में मनाते है। युवा दिवस पर 5,63,440 छात्रों की सहभाग से 1765 स्थानों पर 2194 कार्यक्रम किए गए। वहीं राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस के रूप में मनाया जाने वाला अभाविप का 71वां स्थापना दिवस कोरोना वैश्विक महामारी की परिस्थिति में Online तथा Offline दोनों ही रूपों में मनाया गया। अपने संगठन के स्था पना दिवस पर उत्सौहित एवं प्रफुल्लित कार्यकर्ताओं के द्वारा पूरे देश में 4,47,702 सहभागियों की उपस्थिति में 2284 स्थातनों पर 2549 कार्यक्रम किए गए। जोधपुर के कार्यकर्ताओं द्वारा किसान सम्मायन समारोह, गोरक्ष प्रांत द्वारा 'पढो इंडिया बढो इंडिया' अभियान, दक्षिण बंगाल के 86 कार्यकर्ताओं द्वारा नेत्रदान का प्रण, सिक्किम प्रांत की ग्यलाशिंग इकाई द्वारा अनाथालय में वस्त्र वितरण तथा महाराष्ट्र प्रांत द्वारा छात्र किसान संवाद कार्यक्रम सबके आकर्षण के केंद्र रहे। बाबा साहेब परिनिर्वाण दिवस को देश भर में समरसता दिवस के रूप में मनाया गया। वहीं स्त्री शक्ति दिवस यानी लक्ष्मीबाई की जयंती के मौके पर देश भर अनेकों कार्यक्रम छात्रा सम्मेलन इत्यादि का आयोजन किया गया।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर देश भर में छात्राओं से जुड़े अनेक प्रेरणादायी कार्यक्रम हुए है। कानपुर प्रांत द्वारा महिला वृद्धाश्रम में फल वितरण, महिला पुलिस, स्वेच्छताकर्मी, चिकित्स्क सम्मान, झांसी किला दर्शन, काशी प्रांत द्वारा सेनेटरी नैपकिन, वस्त्र वितरण, केरल प्रांत द्वारा महिला सशक्तीकरण छात्रा कार्य किये गये।नीट परीक्षाओं की परेशानियों को देखते हुए अभाविप ने देश भर में उनकी सहायता के लिए नीट हेल्पलाईन जारी किया। जनजातीय कार्य के बारे में जानकारी देते हुए उन्होंने कहा कि मध्यभारत प्रांत द्वारा जनजाति छात्रों की विभिन्न मांगों को लेकर 18 जिलों में जिला सहायक आयुक्त कार्यालय का घेराव प्रदर्शन किया गया । जनजातीय विद्यार्थियों के लिए स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम चलाया गया, जिसमें 160 विद्यार्थियों ने भाग लिया ।छत्तीसगढ़ प्रांत द्वारा चार दिवसीय 'चौपाल-जनजाति छात्र गोठ' नामक कार्यक्रम का आयोजन किया गया झारखंड में भगवान बिरसा मुंडा की पुण्यतिथि के अवसर पर प्रांत द्वारा 'एक दिया धरती आबा के नाम' से कार्यक्रम का आयोजन किया गया। महाकौशल प्रांत द्वारा फेसबुक पेज के माध्यम से 'जोहार' जनजाति महोत्सव का आयोजन किया गया । इसमें 160 से अधिक छात्र-छात्राओं से सीधा संपर्क किया गया। साथ ही भगवान बिरसा मुंडा की जयंती को देश भर में जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाया गया। कोरोना काल के दौरान अभाविप ने तकनीक का भरपूर उपयोग किया और अभाविप के आयाम एग्रीविजन, फार्मा विजन, थिंक इंडिया, कला मंच, WOSY इत्यादि के द्वारा ऑनलाइन कार्यक्रम, वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें बढ़ चढ़कर विद्यार्थियों ने भाग लिया। ■

प्रिय मित्रों !

शिक्षा - क्षेत्र की प्रतिनिधि - पत्रिका के रूप में 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' जनवरी 2021 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत हैं। यह अंक महत्वूर्ण लेख एवं विभिन्न समसामयिक घटनाक्रमों व खबरों को समाहित किए हुए हैं। आशा है, यह अंक आपके आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा। कृपया 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से संबंधित अपने सुझाव व विचार हमें नीचे दिए गए संपादकीय कार्यालय के पते अथवा ई - मेल पर अवश्य भेजें : -

'राष्ट्रीय छात्रशक्ति'
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298
www.chhatrashakti.in
rashtriyachhatrashakti.abvp@gmail.com
www.facebook.com/Rchhatrashakti
www.twitter.com/Rchhatrashakti

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 66वें राष्ट्रीय अधिवेशन में पारित प्रस्ताव

राष्ट्रीयता का भाव परिलक्षित करती राष्ट्रीय शिक्षा नीति का हो शीघ्र क्रियान्वयन

भारत केंद्रित शिक्षा ही हमें एक समृद्ध, शक्तिशाली,ज्ञान केंद्रित समाज के रूप में प्रतिष्ठित कर सकती है। हमारे देश के स्वाभिमान ,स्वावलंबन और संस्कार के प्रति प्रतिबद्ध राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लाने के लिए भारत सरकार का अभिनंदन।देश के जनमानस की इच्छाओं, अपेक्षाओं और स्वप्नों को धरातल पर उतारने की क्षमता रखने वाली राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का अभाविप का यह 66वां राष्ट्रीय अधिवेशन स्वागत करता है।

भारतीय भाषाओं (स्थानीय भाषा) में शिक्षा लेने की स्वतंत्रता, भारतीय ज्ञान/कला/ विधा /साहित्य के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए संकल्पित यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारत को विश्वगुरु बनाने में एक सशक्त प्रयास है। प्रारंभिक शिक्षा में वर्ष 2030 तक 100% और उच्च शिक्षा में वर्ष 2035 तक 50% सकल नामांकन अनुपात (Gross Enrolment Ratio-GER) का लक्ष्य लेना सराहनीय है। भारत की विविधता को अपने भीतर समाहित करने वाली राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का क्रियान्वयन भी उसकी मूलभूत भावना के अनुरूप ही होना चाहिए । सर्वस्पर्शी एवं सर्वसमावेशी राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन हेतु अभाविप के 66वें राष्ट्रीय अधिवेशन का सुविचारित मत है कि-

सामाजिक तथा आर्थिक रूप से पिछड़े, दिव्यांग एवं ट्रांसजेंडर विद्यार्थियों तथा छात्राओं की शिक्षा हेतु प्रस्तावित छात्रावास, छात्रवृत्ति तथा अन्य सुविधाओं को शीघ्र ही उपलब्ध कराया जाए।

विद्यार्थीपरक, रुचि के अनुरूप विषय चुनने तथा परिस्थिति के अनुरूप पाठ्यक्रम को पूर्ण करने की स्वतंत्रता, पूर्व में शिक्षेतर गतिविधि यथा-योग, खेल - कूद, कला आदि के रूप में प्रसिद्ध इन गतिविधियों को मूल पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना तथा अकादमिक मूल्यांकन कोष (Academic Bank of Credit) जैसी महत्वपूर्ण योजनाओं को शीघ्र ही लागू किया जाए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति की मूलभूत भावना के अनुरूप भारत केंद्रित पाठ्यक्रमों के निर्माण को प्राथमिकता दी जाए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसारशिक्षा जगत को और अधिक सशक्त बनाने हेतु प्रयासरत स्वयंसेवी व्यक्तियों तथा संस्थाओं का सहयोग लेने तथा अपनी कार्यक्षमताओं के अनुरूप अपनी शैक्षणिक संस्था का संवर्धन करने की स्वतंत्रता केंद्र एवं राज्य सरकारें शीघ्र ही प्रदान करें।

शोध की दशा और दिशा सुधारने हेतु राष्ट्रीय शोध प्रतिष्ठान (NRF) का गठन यथाशीघ्र किया जाए एवं वर्तमान में शोध पर होने वाले व्यय सकल घरेलू उत्पाद के कुल 0.67% की धनराशि को बढ़ाया जाए। केंद्र तथा राज्य सरकारें राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रस्तावित सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का 6% शिक्षा के उत्थान हेतु शीघ्र उपलब्ध कराएं।

सकारात्मक ऊर्जा से संपन्न शिक्षकों के विकास हेतु उनका प्रशिक्षण, आय तथा प्रोन्नति से संबंधित विषयों पर गंभीरता से विचार किया जाए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में परिलक्षित सस्ती एवं सुलभ शिक्षा हर विद्यार्थी को मिले, इसे ध्यान में रखते हुए शुल्क निर्धारण आदि के विषयों पर तुरंत कार्य किया जाए।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का यह 66वां राष्ट्रीय अधिवेशन समस्त शिक्षक समुदाय, शिक्षा के हितधारकों, केंद्र तथा राज्य सरकारों से यह आह्वान करता है कि वे राष्ट्रीय शिक्षा नीति के यथाशीघ्र क्रियान्वयन हेतु कार्यसमूह(taskforce) का गठन कर समयबद्ध रूपरेखा जारी करें। ■

66 वां राष्ट्रीय अधिवेशन

25-26 दिसंबर 2020

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद
राष्ट्रीय अधिवेशन

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद
राष्ट्रीय अधिवेशन

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद

ABVP 66th National Confrence, Resolution - 2

National scenario

The 66th National conference of ABVP applauds the efforts of the union government in commencement of construction work of Shri Ram Temple at Ayodhya, implementation of the Citizenship Amendment Act which symbolises the thought of VasudhaivaKutumbakam, giving a befitting reply to the opponent army at Galvan Valley, the arrival of Rafale to India and the ban on 224 Chinese apps. This National Conference welcomes the decision of the Governments to resolve and effort in achieving the stated goals of climate protection as stated in the Paris agreement . India is firmly facing its internal challenges participationof citizens in the recently conducted elections in Jammnu and Kashmir shows the acceptance of people for the historic decision of abolishment of article 370. The service activities done by the entire Indian society during the Corona lockdown is notable , Oorganisations such as SevaBharti, Gurdwara and social religious institutions have been in the forefront of seva activities which proves that India is society centric and not dependent on the government .

On one hand India is setting new records in the Defense sector , cultural and heritage On the other hand some seperatist people are trying to disturb the internal peace of the country. The 66th National congerence of ABVP condemns [people with cult mindset creating an environment of hatred in thye society and inciting violence in Delhi, Chhattisgarh police providing protection to rapists due to the pressure from the government , West Bengal government supporting to violence in Leading to Increasing political violence , attack on a police station in Bengaluru are condemnable politics on incidents like rape, some states governements like Maharashtra, West Benagl and Kerala suppressing the voice of media the fourth pillar of democracy and leftist organisation like SFI that keeps an opprtesive mindset instigating workers in Apple factory to vandalise the place.

ABVP has always been in favour of the broad interests of farmer families and agricultural labourers. This 66th National Conference of ABVP supports the farm bill passed to bring improvements in agriculture and believes that the on-going farmer movement is being diverted by the anti-national forces in the guise of the farmers. ABVP appeals to the government to put an end to the chaos and clear the confusions in the minds of the farmers.

The participation of girl students is increasing in all fields like the NCC, NSS and armed forces is increasing on the other hand we see the increasing violence against women by poeple with anti women and Jihadi mindset, Nikita Tomars murder in Haryana, rape of tribal student in Chatisgarh, and 1155 cases of rapesin 215 days in Jharkhand are worrying. Therefore, this 66th National conference of ABVP demands strict legislation by the Central Government like Madhya Pradesh and Uttar Pradesh governments against such cruel mentality.

India cinema has great influence on the society and specailly the youth. A certain section of the film industry consuming drugs justifying it and promoting it from medioums like films is extremely worrying. It is a demand of the 66th ABVP national conference that the central government should take a clear and firm action to eradicate this problem.

The census occupies a very important place in the policy making of the country. It is the census year in 2021. This 66th National conference of the ABVP calls upon the citizens of the country, from the students and from different sections of the society to actively participate in the census with its correct identity by giving true information, and beware of the elements trying to create misunbderstanding in the society. ■

आगामी परिस्थिति एवं अपने कार्य का स्वरूप : आशीष चौहान

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 66वें राष्ट्रीय अधिवेशन के 'आगामी परिस्थिति एवं अपने कार्य का स्वरूप सत्र' को संबोधित करते हुए कहा कि मित्रों यह वर्ष बहुत घटनाक्रमों का रहा। ऐसा पहले न कभी हुआ था और होने की संभावना लगती है। हम वर्ष 2020 के आखिरी पड़ाव में है। साल भर पहले वुहान नाम का जगह चर्चा में आया। बताया गया कि वुहान में सी-फूड का कोई बाजार है वहां से कोरोना वायरस निकला है। अगर हम कहे जांच के प्रश्न होंगे, संस्थाओ के द्वारा उसे जांचने, परखने के बाद हमें मालूम पड़ पाएगा परंतु यह तो सच्चाई है कि कोरोना वायरस के कारण तुरंत उसका कोई उपचार नहीं था अभी तक भी नही है वैक्सिन का जो प्रयोग हो रहा है वो अभी शुरुआती चरण के अंदर है। वुहान से निकला वायरस पूरे दुनिया तक पहुंच रहा है। उस वायरस की तीक्ष्णता शायद कम है उससे पहले के इबोला वायरस से उसकी तुलना की और कहा कि यह इबोला का 10 प्रतिशत है। अन्य किसी वायरस से यह बहुत कम खतरनाक है परंतु जिस प्रकार छल कपट उस देश का हमारे देश की सीमा पर देखने को मिलता है, उसी प्रकार वहां से निकलने वाले वायरस का भी स्वरूप है। संक्रमित व्यक्ति को 2 से 5 दिनों तक ध्यान में नही रहता फिर संक्रमण बढ़ता है। आप सोचिये जितने सदस्य संयुक्त राष्ट्रसंघ में नही है, जितने देश फीफा में नहीं है उससे कहीं अधिक देशों के अंदर जिन्होंने अपने को संप्रभु बताया है, ऐसे देशों के अंदर कोरोना का वायरस फैला।

इससे पहले के पेंडेमिक चाहे स्पेनिश फ्लू हो या कोई अन्य। कितनी महामारीयां आई परंतु वैश्विक महामारी का प्रसार की तुलना में वृहद स्वरूप में यह महामारी पहुंची और 218 देशों में लगभग सात करोड़ मामले आए।

पश्चिम और खाडी के देशों से भारत में संक्रमण शुरू हुआ। भारत के अंदर भी एक करोड़ से अधिक मामले हुए हैं। हालांकि यहां का मृत्यु दर अन्य देशों की तुलना में बहुत कम है। कोरोना के मामले जब पश्चिम की ओर से आ रहे थे, व्यवस्थाएं ध्वस्त हो रही थी उस समय लोगों को पता ही नहीं चला कि यह किस तरह का वायरस है। कोरोना के कारण पूरी दुनिया में तालाबंदी हो गई,

जिससे भारत भी अछूता नहीं रहा। हम आज आशा कर सकते है की तालाबंदी हटने के बाद अनलॉक के इतने चरण होने के बाद जो मामले आज हैं, वह कहीं ना कहीं संक्रमण की भाषा में जिसे पीक कहते हैं उससे नीचे आ चुके हैं। कोरोना ने पूरी अर्थव्यवस्था को रोकने का काम किया। आर्थिक व्यवहार,स्कूल,ऑफिस बंद हो गए आज भी मुंबई के अंदर उपनगरीय ट्रेनें बंद है। ऐसी परिस्थिति में दुनिया के पूरे अर्थतंत्र को एक भारी धक्का पहुंचा है। कोरोना के कारण तालाबंदी के पश्चात जब लोगों ने उत्पाद पर प्रश्न करना शुरू किया तब पता चला कि पूरी दुनिया चीन पर कितना आश्रित है ?

ऐसे समय में जब हम प्रतिकार करना चाहते थे उस समय में घर की दैनिक जरूरतों के सामान के लिए हम चीन पर आश्रित थे। क्योंकि चीन इतने वर्षों में प्रोडक्शन हब बन चुका था। अमेरिका में श्वेत एवं अश्वेत सभी समुदायों ने चर्चा की कि आयुध से औषधि तक हर चीज पर वो चीन पर आश्रित थे।

भारत विश्व में औषधि शक्ति के रूप में सामने आया,टीके से लेकर औषधि पहुंचाने तक के कई कार्य भारत के हाथ में है।

अभी भारत में भी पता चला कि औषधि बनाने के किए API यानी कि कच्चा माल हम चीन से लेते हैं तो हमारी औषधीय क्षेत्र में शक्ति भी चीन पर आधारित है। दीपावली से लेकर होली तक,चीनी धागा,पटाखे लाइट्स के लिए हम आश्रित हैं अतः विकल्पों की तलाश की जा रही है किन्तु लेफ्ट जैसे कुछ दल आज भी इसके खिलाफ हैं । और यहां तक लिख देते हैं कि भारत इसमें सक्षम नहीं है। भारतीय के रूप में विक्रेताओं का एक समूह खड़ा किया और तीन हजार से अधिक सामानों की सूची बनाकर कहा हम ये सामान चीन से नहीं लेंगे बल्कि विकल्प की तलाश करेंगे और देश के अंदर वितरित करेंगे। शायद हमारे मन में ये प्रश्न आये कि जब विकल्प थे तो पहले क्यों नही किया या फिर क्या हम इसे पूरा कर पाएंगे तो ढूंढने पर पता चला कि तमिलनाडु के तिरुपुर नाम की जगह है पूरी दुनिया के अंदर कपड़ा और टी शर्ट, ऊनी कपड़ों के लिए पंजाब का लुधियाना, खेल के समान के लिए जालंधर ये ऐसे क्षेत्र है जो दुनिया भर में मानक माने जाते है और अपने क्षेत्र में अग्रणी है। चीन सिरामिक की बात आई तो उसको टक्कर देने का काम गुजरात के एक छोटे नगर मोरबी ने किया और नया विकल्प दिया।

भारत आगामी दिनों के अंदर विश्व के आर्थिक शक्ति के रूप में आगे बढ़ने जा रही है इस पर किसी भी संस्था को कोई संकोच नही है, सभी भारत को एक महाशक्ति के रूप में देख रहे कोरोना कालखंड में दुनिया मे सबसे ज्यादा PPE किट भारत में उत्पादित किये गए। अगर प्रयोगों को देखें तो नवाचार करने वाली जो युवा शक्ति भारत की है OYO रूम्स का संस्थापक एक 26 साल का युवा है उसने ऐसा पटल बना कj दिया जिसके माध्यम से दुनिया भर के होटल का संचालन करता है। ऐसे नवाचार के साथ भारत मे रहकर जो युवाओं ने जो प्रतिभा हासिल की है वैसी कहीं और नही मिलेगी।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने रिपोर्ट प्रस्तुत कर स्वच्छता के इतिहास के बारे में बताया तो पता चला कि सबसे पहला शौचालय दुनिया के अंदर कही आया तो वो सिंधु घाटी सभ्यता के लोथल के अंदर था।

एक बार मैं एक Architect से बात कर रहा था तो उन्होंने बताया कि किस प्रकार उनके पूरे के पूरे पाठ्यक्रम में उन्हें इस्लामिक, गॉ-थिन यानी यूरोपियन Architecture पढ़ाया जाता है, उनको आधुनिक Architecture बताया जाता है और 2 या 3 पन्नो में भारतीय Architecture को खत्म कर दिया जाता है। भारत के अंदर स्थापत्य कला की मंदिरो की जितनी लंबी परंपरा है उसे 2 या 3 पन्नो में समाप्त कर देना चाहते है

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसमे जब दुनिया के स्वच्छता के इतिहास के बारे में बताया तो पता चला कि सबसे पहला शौचालय दुनिया के अंदर कही आया तो वो सिंधु घाटी सभ्यता के लोथल के अंदर था। ऐसे प्रयोगो के बारे में राखीगढ़ी के बारे में हमे पिछले वर्ष आगरा अधिवेशन में सुनने को मिला। मैं दिल्ली विश्वविद्यालय के कार्यकर्ताओं को अभिनंदन करना चाहता हूं कि उन्होंने यही एक प्रयास किया उन्होंने प्रश्न उठाया, प्रश्न ये भी उठाया कि इस पाठ्यक्रम के अंदर क्या लिखा है और पतले पतले अक्षर में जो पठनीय

सामग्री में क्या लिखा है उसके बारे में भी हमें लड़ना पड़ेगा प्रश्न करना पड़ेगा। तमिलनाडु के कार्यकर्ताओं को बधाई देना चाहता हूं कि आपने देश को तोड़ने वाले ताकतों के अग्रिम पंक्ति में जो नाम दिखता है उनके साहित्य के बारे में जब प्रश्न किया तो वो प्रश्न मानने के लिए लोगो को तैयार होना पड़ा।

देश के अंदर पश्चिम के वाद से प्रेरित होकर कितने तरह के नई चर्चाएं प्रारम्भ होती है। प्रश्न CAA, जम्मू कश्मीर के स्टेटस के बारे में, समान नागरिक संहिता के विषय में कितने ही और प्रश्न खड़े किए जाएंगे, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की बात होगी आप सभी को ज्ञात होगा डॉ आंबेडकर जी ने संविधान सभा के सदन में कहा कि समाजवादी लोग इतनी अधिक स्वतंत्रता चाहते है कि जब वो सत्ता से बाहर हो तब वे शासन में चुनकर आये हुए लोगो को तंग कर सके और Anarchi बना सके और जब वो स्वयं आएंगे तो इसे ध्वस्त करके रहेंगे। मुझे एक और क्षण याद आता है जब डॉ आंबेडकर जी से पूछा कि आप हर एक व्यक्ति के मत को समान क्यों कर रहे है तो उन्होंने कहा कि हर एक व्यक्ति को एक वोट है मतलब वो बराबर इसलिए नहीं है कि उसे एक वोट है भारत का यह चिर पुरातन विचार है कि हरेक व्यक्ति के अंदर जो आत्मा है वो एक है बराबर है, समान है इसलिए सभी को एक ही वोट का अधिकार है। ढाई सौ साल पहले अमेरिका का संविधान बना लेकिन महिलाओं को मताधिकार देने में उसे दो वर्ष लगे, इसी तरह ब्रिटेन को आठ सौ वर्ष लगे। भारत ने एक दिन भी बर्बाद नहीं किया और सारे समाज का जो भाव भारत के अंदर था उसको परिलिक्षित करते हुए सभी को समान मत का अधिकार दिया चाहे वो देश का राष्ट्रपति हो या खेतिहर मजदूर सबका मत समान होगा। जब इस चर्चा को लेकर हम पुनः परिसरों में जाएंगे तो एक बहुत बड़ा काम हमारे सामने उपस्थित होगा इसलिए कैम्पस में पाठ्यक्रमों से आगे निकलकर के परिवेश के ऊपर भी हम चर्चा करेंगे। हमारे सामने कई उदाहरण आते है ऐसे परिसरो के उदाहरण आते है जिसमे सांस्कृतिक और खेल दोनों गतिविधि को समाहित करके विद्यार्थियों के सामने रखने का एक काम किया। मैसूर का ऑलवेज कॉलेज उसका उदाहरण आता है कि किस प्रकार कला और खेल इन विधाओ को साथ मे लेकर वो विद्यार्थियों का विकास करते है, शांति निकेतन गुरुदेव रविन्द्र नाथ टैगोर के द्वारा प्रारंभ हुआ वह कुछ दिनों पूर्व पौष महोत्सव यानी कि किसानों के साथ मिलकर पहली बार खेती कैसे करनी है उसको परिसर के अंदर करते है। मुम्बई के मिडी के अंदर प्रो मंडी जो MBA के विद्यार्थियों को जब वे पढ़ाई करने आते तो अपना खर्च स्वयं वहन करने के लिए बाजार में जाकर ये चार पुस्तकों को बेच कर आइये 4 उत्पाद बेच कर आइए जब वो बेच कर आता है तो उसके मैनेजमेंट का व्यवहारिक ज्ञान होता है साथ मे ही एक संस्कार भी मिलता है। ऐसे ही परिसरो के अंदर नवीन तरीको से शिक्षा को प्रदान करने के तरीकों के ऊपर काम हो रहा है। जब 2010 में हमने एक सर्वे किया तो पता चला कि गुजरात के अंदर उसी पोलटेक्निक की फीस 1500 और पंजाब के अंदर 80000 थी तो ऐसी सतत लड़ाई लड़ते लड़ते हमने प्रदेशों के अंदर फी रेगुलेशन कानून बनवाने का काम किया। आने वाले दिनों के भी ये लड़ाई ऐसे ही चलती रहेगी। हम देखते है कि परिसरों में अंदर विद्यार्थी परिषद का अपना क्या भागीदारी रहने वाली है हम परिसर के अंदर शिक्षा के परिवेश को कैसा बनाते है हमने कहा कि हम उसे इच्छुक बनाएंगे राष्ट्रीय कला मंच, स्टूडेंट फ़ॉर सेवा, स्टूडेंट फ़ॉर डेवलपमेंट ऐसी कई नई नवीन गतिविधियों के माध्यम से हम परिसरों को नवाचार से भर देना चाह रहे है। हम ऐसे परिसरों के अंदर जीवंत वातावरण के लिए प्रयास कर सकते है, परिसरों के अंदर जो तरुणाई जिसे लेकर युवाओं के बीच मे जाते है उसको परिलक्षित करते हुए गतिविधियों के नए केंद्र खड़े कर सकते है । सामाजिक सनुभूति से लेकर मिशन साहसी करके दिखाया है तो नए कौन से प्रयोग हम कर सकते है लगता है कि किसी को कोई पर्यावरण के बारे में जानकारी चाहता है तो उड़ीसा के कार्यकर्ता तटीय इलाके में जो कछुए आते है उनकी स्टडी कर सकते है, पहाड़ी इलाकों में नार्थ ईस्ट के विद्यार्थी वहां पर पर्यटन को बढ़ाने के लिए कर सकते है, हम नवीन पूर्ण कौशल को अपने इकाई और नगरों के अंदर प्रारंभ कर सकते है। हमारे इकाई में होने वाले प्रयोगों के साथ अभाविप जो समाज के उन्मुक्त प्रयास करने वाला है, राष्ट्र के लिए नए नेतृत्व को खड़ा करने वाला है उसके लिए जो टीम खड़ी होगी वो टीम खड़ी करने का काम इन परिसरों के अंदर होगा इन नगरों ने अंदर होगा। इसलिए अभाविप आने वाले दिनों में नवीकरणीय प्रयोगों के लिए सतत आह्वान करती रहेगी। ■

ABVP 66th National Confrence, Resolution – 3

Aatmanirbharta astep towards prosperous India

Moving towards self-reliance, India is scaling new heights in field of education, economic, health and science etc. India reaffirmed its idea of 'VasudhaivaKutumbakam' by helping countries like America, Russia, Germany, United Kingdom, United Arab Emirates, Malaysia etc. in the difficult situation of the Corona period.

Before the Corona period manufacturing of sanitizer, PPE kit and ventilator was low, today they are being produced in millions. In the last few years, the use of indigenous technology has steadily increased in the manufacturing of space and defense equipment recently ISRO successfully tested the EOS-01 Earth observation satellite which will be used for agriculture, forest and disaster management.

Succesfull testing of Brahmos supersonic cruise missile, establishment of defence corridor by Ministry of Defence and lsiting of 101 weapons which will be manufactured in India instead of procuring from foreign countries this will boost self employment(StartUp) in the technological field.

By promoting small and micro industries under self-sufficient India, new employment opportunities are being created and demand for indigenous products is increasing in the market, until now we were dependent on other countries for the equipment used in our festivals and toys which are now being produced in India. For example total size of toy industry in India is Rs 12,863 crore, out of this 87-88 % was being imported and around 12-13% was being produced in India, this percentage has increased to 25% in September 2020.

India is the second largest country in micro, small and medium scale industries with a total of 6000 products manufactured which range from traditional to Hi-tech products, the contribution of this is around 6.11% of GDP, to support these industries Indian government has given Aatmanirbhar package of Rs 5,94,550 crore. This will create new job opportunities for the youth of India.

Along with the production of wheat and ricefocus should be to increasethe production of other crops and by creating food processing units steps should be taken to promote vocal for local which should increase the income of the farmers.

The ABVP 66th National Conference is of the opinion that the central and the state governments should support localisation of industries based on agriculture, forest in small and medium scale. This will reduce the dependency on urban areas and also the issues of labour migration. ■

संघ और विद्यार्थी परिषद में दिये गये संस्कारों के कारण मिली है सफलता : नितिन गडकरी

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 66वें राष्ट्रीय अधिवेशन के युवा पुरस्कार समारोह में केन्द्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि मेरे लिए यह आनंद का विषय है कि अपनी अच्छी पढ़ाई होने के बाद अपना जीवन कृषि विकास एवं किसानों के कल्याण के लिए अर्पित किया है। कृषि क्षेत्र में विकास के लिए अपना जीवन देने वाले व्यक्ति को पुरस्कार देने का अवसर मुझे मिला, यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है। देश में सामाजिक, आर्थिक समता – समरसता प्रस्थापित होगी तभी राष्ट्र का पुनर्निर्माण होगा। यशस्वी प्रयोग से प्रेरित होकर यह प्रयोग लाखों युवाओं तक पहुंचाकर ग्रामीण और कृषि क्षेत्र में सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन की प्रक्रिया को विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता गतिशील करें। उन्होंने कहा कि जैविक ईंधन निर्मिती, कृषि और ग्रामीण क्षेत्र के विकास सहित सफल प्रयोग पर अधिक जोर है। वह दिन दूर नहीं जब आप गांव में व्यवसाय कर सकते हैं। मुंबई, दिल्ली, बंगलुरु, चेन्नई जैसे शहर छोड़कर लोग गांव की ओर रूख करेंगे।

नितिन गडकरी ने कहा कि जिनके स्मृति में यह पुरस्कार दिया जा रहा है वैसे प्रा. यशवंत राव केलकर जी के साथ हमने विद्यार्थी परिषद का कार्य किया है। मैंने

उनको करीब से देखा है। यशवंतराव जी विश्वविद्यालय थे। हमारी पूरी जो कार्यपद्धति है, बहुत ही अविस्मरणीय ऐतिहासिक है। दुर्भाग्य से इसका मार्केटिंग करने में हमलोग इतने कामयाब नहीं हो पाये। विद्यार्थी परिषद के दिनों को याद करते हुए गडकरी ने कहा कि मै मुख्य रूप से छात्र नेता और आंदोलन मेरी रुचि के विषय थे तो विद्यार्थी परिषद में दो प्रकार के कार्यकर्ता थे बौद्धिक विचार करने वाले ऐसे कार्यकर्ताओं की एक बड़ी टीम थी और दूसरी चुनाव लड़ने वाले, परिसर में आंदोलन करने वाले सक्रिय, मुझे दूसरे समूह मे ज्यादा रूचि थी लेकिन यशवंत राव जी, दत्ता जी,मदन दास जी, सदा शिव राव जी इत्यादि के साथ जब संपर्क में आया, मेरी धारणा ही बदल गई। मेरे जैसे विद्यार्थी कार्यकर्ता को बहुत कुछ सीखने को मिला। हमारे कार्य की विशेषता है कि हम तीन प्रकार के कार्य : संगठनात्मक, रचनात्मक, आन्दोलनात्मक। इन तीन प्रकार के कार्य हम करते रहे, इसके साथ जो राष्ट्रीय पुनर्निर्माण हमारा उद्देश्य था, उस उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए और जो समाजिक आर्थिक परिवर्तन के लिए हमारी जो प्रतिबद्धता है, कार्य करते रहे। आपकी जो छाया रहती है उसको आप कितने भी स्पीड से दौड़ आएंगे तो भी आप उसको पकड़ नहीं सकते वैसे ही पूर्णांक की ओर जाने की मार्ग में है। हम कभी पूर्णांक नहीं बन सकते। आगे उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति गुण-दोषों से बना है और हमें ऐसी कार्य पद्धति विकसित करनी है कि हम उसके दोषों को कम करें और उसके गुणों को बढ़ाएं। ऐसी कार्यपद्धति को विकास करने के बारे यशवंतराव जी वह बार-बार कहते थे कभी किसी कार्यकर्ताओं के दोष के लिए उसको सार्वजनिक रूप से कभी नहीं कहा जाता, वह कहते थे किसी को उनकी गलतियों के बारे में बताना है तो तो अकेले में बताओ और किसी की तारीफ करनी है तो सब लोगों में करो।जिस प्रकार से मिट्टी गीली होती है, आकार देने वाला तय करता है तो उसमें मूर्ति में तैयार होगी। संस्कारों का महत्व है व्यक्ति के ऊपर, अच्छे संस्कार जब उसको मिलेंगे अपनी कार्यपद्धति से, उससे अच्छे व्यक्ति और अच्छे नागरिक तैयार होंगे और मैं इतना बड़ा कार्यकर्ता नहीं हूं। मैं कोशिश कर रहा हूं कि हमारे ठेंगड़ी जी और केलकर जी ने जो हमें सिखाया है, जो कार्यपद्धती दिए, जो व्यक्ति निर्माण और व्यक्ति संस्कार के कार्यपद्धति का स्वरूप हमें समझाया है । उसे अपने जीवन में उतारूं।

केन्द्रीय मंत्री ने कहा कि भारत और विदेशों के पत्रकार उनसे पूछते हैं कि वह इतनी बड़ी ढांचागत परियोजनाओं को सफलतापूर्वक कैसे पूरी कर लेते हैं ? इसके जवाब में उन्हें कहता हूं कि "मैं कोई इंजीनियर या तकनीकी विशेषज्ञ नहीं हूं, ना ही मैं कोई प्रतिभाशाली विद्यार्थी था। मैं उन पत्रकारों से पूछता हूं क्या आप रा.स्व.संघ और विद्यार्थी परिषद को जानते हैं, क्या आप उसकी विचारधारा और काम करने के तरीके को जानते हैं ?" जवाब होता है नहीं। संघ एवं विद्यार्थी परिषद की कार्यपद्धति अनूठी है। मेरा सौभाग्य रहा कि प्रा. यशवंतराव केलकर, दत्तोपंत ठेंगड़ी और भाउराव देवरस जी जैसे विद्वत जनों के साथ काम करने का मौका मिला। उन्होंने कहा कि मुझे जो सफलता मिली उसका श्रेय अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद और रा.स्व.संघ से मिले संस्कारों को जाता है। गडकरी ने कहा कि पिछले कुछ महीनों से मैं यशवंतराव केलकर, दत्तोपंत ठेंगड़ी, और भाऊराव देवरस से मिले संस्कारों और उनके काम करने के तरीको को शब्दों में ढालने का प्रयास कर रहा हूं। (किताब लिख रहा हूं कि) काम करने यह तरीका कॉरपोरेट और प्रबंधन के क्षेत्र को किस प्रकार प्रभावित कर सकता है।

सपनों में भी नहीं सोचा था, इस मंच से मुझे सम्मानित किया जायेगा : मनीष कुमार

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के शिल्पकार कहे जाने वाले प्रा. यशवंत राव केलकर की स्मृति में दिये जाने वाले युवा पुरस्कार प्राप्त होने के बाद जैविक कृषि के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले ने कहा कि मैंने कभी सपनों में नहीं सोचा था जिस विचार परिवार से

प्रेरित होकर कार्य शुरू किया उस वैचारिक मंच पर मुझे सम्मानित किया जायेगा। सच कहूं तो यह पुरस्कार नहीं, आशीर्वाद है मेरे लिए। मैं विगत दस वर्षों से कृषि क्षेत्र में काम कर रहा हूं। पिछले वर्ष हमें पता चला कि एमएसएमई विभाग में कृषि के लिए इतनी संभावना है।

आज के समय में तीन संस्थाओ से मेरी पहचान है। पहला रा.स्व.संघ जिससे 1999 में जुडे। दूसरा आई.आई.टी. खड़गपुर जहां पर हमने इंजीनियरिंग की पढ़ाई की और तीसरा बैक-टू-विलेज। कृषि क्षेत्र में कार्य करना हमने गांव से शुरू किया। एक संस्था बनाई बाद में उसे छोड़कर बैक टू विलेज (B2V) बनाकर काम करना शुरू किया।पिछले वर्ष सौभाग्य से IIT खड़गपुर ने Young Alumni Achievers Award 2019 हमको मिला। नानाजी देशमुख मेरे आदर्श है, एक मराठी व्यक्ति उत्तर प्रदेश जा कर ऐसा काम करता है। लोकसभा चुनाव में जीतते है और राजनीति केशीर्ष फलक पर पहुंचने के बाद राजनीति छोड़ के सामाजिक क्षेत्र में काम करता है, तो एक ऊर्जा मिलती है कि जब वह देह को छोड़कर जा रहे होंगे, तो काफी संतुष्ट होंगे कि उन्होंने कुछ कर दिया है। अपनाकुछ बचा हुआ नहीं है।

ईमानदार होना स्वाभाविक प्रक्रिया है, आप बहुत महान नहीं है यह स्वाभाविक प्रक्रिया है, लेकिन वर्तमान समय में आप ईमानदार है तो एक महान बात होना है। अगर आप ईमानदार हैं तो आपके ऊपर समाचार छपेगा। यह इसलिए क्योंकि बाकी लोगों ने ईमानदारी छोड़ दी है खुद को गर्व होना कि हम ईमानदार होकर कोई महान काम कर रहे हैं तो यह आपकी गलती है।उसी प्रकार से हम जो काम कर रहे हैं, वह बहुत ही स्वाभाविक कार्य है। जैसे बाकी लोग कॉर्पोरेट में जा रहे हैं, विदेश में जा रहे हैं वैसे ही हमने गांव को चुना। गांव में वापस जाना स्वाभाविक काम था, क्योंकि बाकी लोग नहीं जा रहे हैं। इसलिए लोग हमें अलग गिन लेते हैं। हमको ऐसा कभी लगा नहीं की कुछ अलग कर रहे हैं और थोड़ा विचार करें, कि जीवन का उद्देश्य क्या है सब लोग सोचेंगे। अपने जीवन के बारे में बताते हुए मनीष कुमार बताते हैं कि मेरे जैसे समान्य परिवार में जन्म लेने वाला बच्चा, जिसकी प्रारंभिक शिक्षा सरस्वती शिशु मंदिर में हुई। सीवान से दसवीं की परीक्षा दी। हम चार भाई – बहन हैं, दो कमरे का घर था, आई.आई.टी खड़गपुर पहुंचने के पहले पर्सनल रूम क्या होता है ? पता भी नहीं था। उसे अगर सम्मान मिल रहा है तो सपना ही लगेगा।

युवा पुरस्कार समारोह में अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष छगनभाई पटेल एवं राष्ट्रीय महामंत्री निधि त्रिपाठी ने भी अपने विचार रखे । क्षेत्रीय संगठन मंत्री आनंद रघुनाथन ने प्रा. यशवंतराव केलकर का जीवन और अभाविप, से सभी को परिचित करवाया। ■

पोस्ट मैट्रिक छात्रवृति योजना में धनराशि बढ़ाना सराहनीय कदम : अभाविप

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद आज केन्द्रीय कैबिनेट द्वारा अनुसूचित जाति के छात्रों के लिए पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना (पीएमएस-एससी) में केंद्रीय प्रायोजित भाग को बढ़ाकर 60% करने के निर्णय को समयानुकूल मानती है।

59,048 करोड़ की कुल अनुमोदित राशि में से केंद्र सरकार द्वारा अगले पाँच वर्षों में 35,534 करोड़ खर्च किए जाएंगे। वर्ष 2017-18 से 2019-20 के दौरान सरकार ने 1100 करोड़ रुपये प्रति वर्ष दिये जिसे बढाकर वर्ष 2020-21 से 2025-26 के लिये 6000 करोड़ रुपये प्रति वर्ष किया गया है। इससे वंचित वर्गों के लगभग 4 करोड़ विद्यार्थियों की शिक्षा में आने वाली बाधाएँ दूर होंगी और कमजोर वर्ग के विद्यार्थियों की आकांक्षाओं को पूर्ण करने के प्रयासों को बल मिलेगा।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की राष्ट्रीय महामंत्री सुश्री निधि त्रिपाठी ने कहा कि, "अभाविप हमेशा से छात्रहित के लिए तत्पर रहा है, और आज यह ऐतिहासिक निर्णय अभाविप परिवार के संघर्षों का परिणाम है। केन्द्र सरकार की पीएमएस एससी योजना कमजोर वर्ग से आने वाले छात्रों के लिए मददगार होगी। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद गरीब वर्ग के विद्यार्थियों के उत्थान और उन्हें भारत की प्रगति में समान भागीदार बनाने के लिए प्रतिबद्ध और प्रयत्नशील है। ■

अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. डी. पी. सिंह का निधन

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. डी. पी. सिंह का लंबी बीमारी के बाद दिनांक 29 दिसंबर 2020 को निधन हो गया। आगरा के आर.बी.एस कॉलेज के कृषि प्रसार विभाग के सेवानिवृत विभागाध्यक्ष डॉ. डी.पी. सिंह ब्रज प्रांत के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष, अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष आदि दायित्वों पर रहकर युवाओं को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

डॉ. डी. पी. सिंह, अत्यंत सरल एवं मधुर स्वभाव के व्यक्तित्व के धनी थे और मूल रूप से अलीगढ़ जिला के निवासी थे। वे वर्ष 1980 ई. में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से सक्रिय रूप से जुड़े। आगरा महानगर अध्यक्ष, प्रदेश उपाध्यक्ष, प्रदेश अध्यक्ष, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं प्रांत प्रमुख जैसे महत्वपूर्ण दायित्वों का आपने सफलतापूर्वक निर्वहन किया। आगरा एवं ब्रज प्रांत में विद्यार्थी परिषद के एक प्रमुख स्तंभ तथा संरक्षक के रूप में आपने सदैव कार्यकर्ताओं की चिंता की।

डॉ. डी.पी. सिंह के निधन पर अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. सी.एन. पटेल, राष्ट्रीय महामंत्री निधि त्रिपाठी तथा राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान ने गहरा शोक व्यक्त करते हुए उनकी आत्मा की शांति हेतु प्रार्थना की। ■

ABVP 66th National Confrence, Resolution - 4

Bharatiya Value System and Civilization driving India's victory against Corona Pandemic

The year 2020 witnessed the spread of novel corona virus emerging from Wuhan(China) turned the whole world upside down. The credibility and acceptance of the Indian knowledge system and value system has increased globally during this phase. The discipline, collectivism, empathy, liberalism, global fraternity, selfless assistance of the Indian society is commendable. The 66th National conference of ABVP appreciates the Union government for initiating and executing public welfare scheme promptly and effectively and alsk appreciates the launch of 'AtmaNirbhar Bharat Mission' aimed at converting this crisis into an opportunity by initiating fundamental and futuristic reforms.

The selfless work carried out by corona warriors like doctors, nurses, health officials, cleaning workers, police officials and administrative workforce as well as volunteers is a matter of happiness. During this phase of crisis, the karyakartas of ABVP have significantly participated in the seva activities, assisting administrative machinery for efficient functioning, launching initiatives like 'ParishadkiPatashaala' for teaching economically and socially backward students and many more similar initiatives generates sense of satisfaction and pride.

This 66th National conference of ABVP holds the clear view that the kind of unity, harmony, discipline, and the spirit of cooperation and empathy driven efforts of public welfare where people distributed without caring about economic cost is commendable. People of India following the instructions & cooperating with the government to fight against the pandemic is an ideal example. During this phase, the Indian Youth imbibed the spirit of innovation to find solutions to ongoing problems through wide meaning efforts from development of apps to production of instruments and materials to fight corona like PPE kit etc. are very encouraging. India has shifted to a new era of technology by converting crisis into an opportunity.

The adoption of Indian way of living and values, and increased usage of Ayurvedic medicines etc. across globe is an example of the excellence of eternal civilization of Bharat. The legitimacy of Indian ideas of human - nature relationship, spirit of global fraternity, yoga etchave increased. The Indian method of greeting like Namaste also explain the relevance of Indian lifestyle. During this phase, India has assisted developed countries to under-developed countries with respect to medicines, resources and scientific assistance driven by the spirit of global fraternity and cooperation. This is a natural expression of India's nature at global stage.

The 66th national conference of ABVP is of the clear opinion that for achieving victory over the global pandemics of Corona will be possible by vaccine production and drives of immunization, along with the adoption and practise of the Indian lifestyle. There is a need to develop new systems by learning from experiences of this pandemic. ■

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद
राष्ट्रीय पदाधिकारी (2020-21)

राष्ट्रीय अध्यक्ष	डॉ. छगनभाई पटेल (मेहसाना, गुजरात)
उपाध्यक्ष	डॉ. रमन त्रिवेदी (पटना, बिहार)
	डॉ. मनु कटारिया (दिल्ली)
	डॉ. प्रशांत साठे (पुणे, महाराष्ट्र)
	डॉ. भूपेन्द्र सिंह (बरेली, ब्रज)
राष्ट्रीय महामंत्री	सुश्री निधि त्रिपाठी (दिल्ली)
राष्ट्रीय मंत्री	कु. विनीता इंदवार (रांची)
	श्री सप्तऋषि सरकार (कोलकाता)
	श्री हर्ष नारायण (बंगलुरू)
	श्री गजेन्द्र तोमर (भोपाल)
	श्री जीत सिंह (नोएडा)
	श्री मुथु रामलिंगम (मदुरै)
	श्री राहुल चौधरी (दिल्ली)
राष्ट्रीय संगठन मंत्री	श्री आशीष चौहान (मुंबई)
राष्ट्रीय सह – संगठन मंत्री	श्री जी. लक्ष्मण (चैन्नई)
	श्री श्रीनिवास (पटना)
	श्री प्रफुल्ल आकांत (दिल्ली)
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	श्री गितेश सामंत (मुंबई)
केन्द्रीय कार्यालय मंत्री	श्री नीरज चौधरकर (मुंबई)
केन्द्रीय सचिवालय सचिव	श्री देवानंद त्यागी (मुंबई)

राष्ट्रीय अधिवेशन की झलकियाँ

RNI NO.: DELBIL/2017/73636
DATE OF POSTING: 10-11 JANUARY, 2021
DATE OF PUBLISHING: 8 JANUARY, 2021

POSTAL REGD. NO.: DL(C)-11/1409/2020-2022
POST OFFICE: NDGPO, NEW DELHI

वर्चुअल माध्यम से राष्ट्रीय अधिवेशन में भाग लेते देश भर के कार्यकर्ता